बच्चे टीएलएम से आकर्षित होते हैं, जैसे तितलियाँ बगीचे से

आदित्य गुप्ता

बच्चों का मन उस तितली के समान होता है जो एक बगीचे में लगे भिन्न-भिन्न रंगों वाले फूलों और उसकी मन मोहने वाली सुगन्ध की ओर आकर्षित हो जाती है। बच्चे हमेशा अपने आस-पास होने वाली घटनाओं एवं गतिविधियों का बहुत सूक्ष्मता से अवलोकन करते हैं तथा उसमें होने वाले छोटे-से-छोटे परिवर्तन से भी आकर्षित होकर प्रतिक्रिया करते हैं। वे उस घटना एवं परिवर्तन को पूर्वज्ञान के आधार पर समझने का प्रयास करते हैं तथा अपनी समझ का विकास करते हैं। यहाँ से शिक्षक की भूमिका प्रारम्भ होती है।

शिक्षक का उसके विभिन्न रूपों और दायित्वों में से एक दायित्व यह भी हो सकता है कि वह एक तितली रूपी बच्चे के जीवन में स्वयं को उस माली के रूप में भी देखे जिसने एक बहुत ही सुन्दर, विभिन्न रंगों से सुसज्जित और सभी का ध्यान आकर्षित करने वाले एक बगीचे का निर्माण किया हो। यहाँ 'बगीचे' शब्द से मेरा आशय उस शिक्षण सहायक सामग्री से है जो अक्सर कक्षा के भीतर एवं कक्षा के बाहर विद्यार्थियों में कुछ नया जानने और सीखने की ललक को जन्म देती है। कक्षा में प्रवेश करते ही बच्चों की नज़र शिक्षक द्वारा लाए सामान पर जाती है। शिक्षक के हाथ में कोई भी नई सामग्री देख सभी बच्चे पूरी एकाग्रता से शिक्षक की ओर ध्यान देने लगते हैं।

शिक्षण सहायक सामग्री की महत्ता पर प्रकाश डालने के लिए मैं अपनी कक्षागत गतिविधियों का उदाहरण देना चाहूँगा। मैं अपने विद्यालय की कक्षा 6वीं के विद्यार्थियों के साथ हुए अपने अनुभवों को साझा करूँगा। कक्षा 6वीं में अक्सर शिक्षकों को विद्यार्थियों में एकाग्रता की कमी सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। रोज़ाना कक्षा 6वीं में सामाजिक विज्ञान विषय का एक अन्तिम कालखण्ड होता है। अन्तिम कालखण्ड तक लगभग सभी विद्यार्थियों का मन भी अधिगम के प्रति उदासीन हो चुका होता है जिस कारण मुझे बहुत-सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यहाँ शिक्षण सहायक सामग्री ने मेरी कक्षा-कक्ष की प्रक्रिया को सुधारने तथा बच्चों में अधिगम के प्रति रुझान को बढ़ाने में बहुत सहायता प्रदान की। भूगोल की एनसीईआरटी की पुस्तक के पाठ क्रमांक 5 'पृथ्वी के प्रमुख परिमण्डल' में वर्णित पृथ्वी के 4 प्रमुख परिमण्डलों को समझाने के लिए मैंने स्वयं कुछ विषय सम्बन्धित शिक्षण सहायक सामग्री का निर्माण किया जो निम्नलिखित हैं-

1. जल-चक्र का मॉडल
2. महासागर एवं महाद्वीप की पहेली (puzzle)
3. जल का वैश्विक वितरण समझाने के लिए- बीकर, टेस्ट-ट्यूब, रंग युक्त जल और ड्रापर की सहायता लेना
4. महाद्वीप के आकार से सम्बन्धित शीट और
5. जल संरक्षण एवं जल संरक्षण के विभिन्न उपायों पर आधारित चलचित्र और वर्कशीट आदि की सहायता लेना।

उपरोक्त सभी सामग्रियों के उपयोग से कक्षा में सभी विद्यार्थियों ने अपनी सकारात्मक भागीदारी दी। इससे कक्षा-कक्ष की प्रक्रिया रोचक रही एवं मैं अधिगम आधारित सीखने के प्रतिफल को सरलतापूर्वक हासिल कर सका।

उपरोक्त लिखित विषय में अधिगम के लिए प्रयुक्त शिक्षण सहायक सामग्री को आगे विस्तारपूर्वक कक्षा प्रक्रिया एवं शिक्षण सहायक सामग्री के चित्रों की सहायता से समझाया गया है-

जलमण्डल :

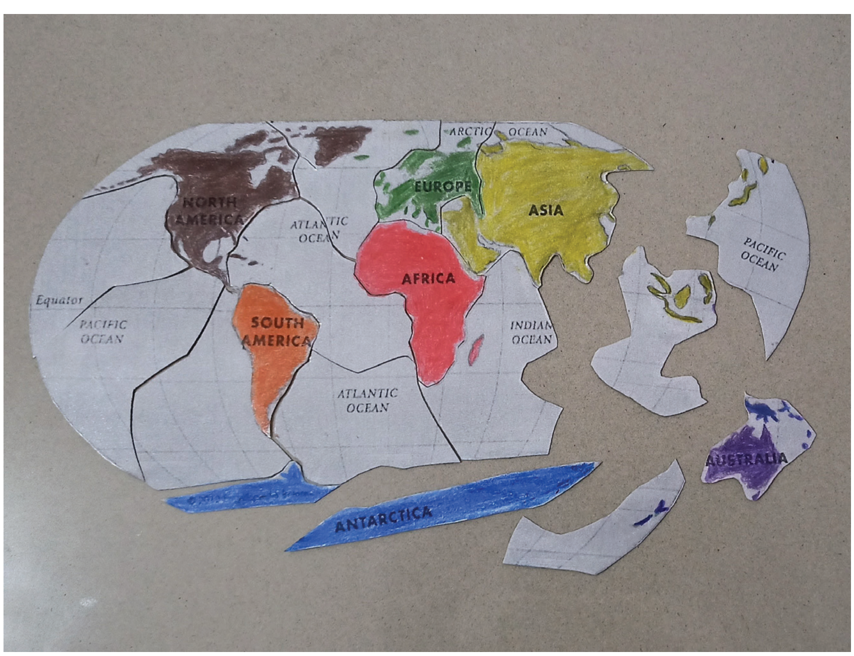
क. पृथ्वी में कुल जल के वितरण को समझाने के लिए मैंने बीकर, टेस्ट-ट्यूब, रंगीन जल और ड्रापर के द्वारा प्रदर्शन (demonstration) किया, जिससे विद्यार्थियों को जल के वितरण एवं रूपों की जानकारी प्राप्त हुई। इसके साथ ही मैंने उनमें जल की महत्ता एवं उसके उपयोग को लेकर जागरूकता और संवेदनशीलता उत्पन्न करने के लिए चलचित्र –'When every drop counts' (https://youtu.be/WxdtmswwHAk) की सहायता ली। इसमें बाड़मेर, राजस्थान में जल की कमी एवं जल संरक्षण के उपायों को दर्शाया गया है। मैंने जल संरक्षण पर विद्याथियों के विचारों एवं जल संरक्षण के उपाय पर आधारित वर्कशीट सभी विद्यार्थियों को मुहैया करवाई। सभी विद्यार्थियों ने वर्कशीट में छपे विभिन्न चित्रों पर अपनी प्रतिक्रिया लिखी और उनके गाँव/ शहर में पानी बचाने के लिए किए गये उपायों को लिखा।

ख. जल-चक्र : विद्यार्थियों को जल के रूप परिवर्तन एवं वर्षा की क्रिया आदि को समझाने के लिए जल-चक्र का मॉडल(चित्र-1) तैयार किया गया। विद्यार्थियों ने इस मॉडल में विशेष रुचि दिखाई।

स्थलमण्डल : मैंने इसके अन्तर्गतमहाद्वीप, उनकी संख्या, स्थिति एवं आकार आदि को समझाने के लिए महाद्वीप की पहेली (चित्र-2) एवं महाद्वीप के आकार से सम्बन्धित शीट का निर्माण किया। मैंने सभी विद्यार्थियों को पाँच समूहों में



चित्र : वर्षा चक्र



चित्र : महाद्वीप की पहेली

विभाजित किया। प्रत्येक समूह में महाद्वीप की पहेली एवं महाद्वीप के आकार से सम्बन्धित शीट प्रदान की। फिर उन्हें पहेली को जोड़ने के लिए कुछ समय दिया। सभी विद्यार्थियों ने इस गतिविधि में उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा महाद्वीप, उनकी संख्या, स्थिति एवं आकार को लेकर अपनी समझ विकसित की।

बच्चों की प्रतिक्रिया और उनसे प्राप्त अनुभव :

बच्चों के साथ अपने अनुभवों को साझा करने से पहले में यह स्पष्ट करना चाहूँगा कि सभी तितलियाँ एक जैसे फूलों से आकर्षित नहीं होती हैं, एक ही तितली हमेशा एक ही फूल से भी आकर्षित नहीं होती है। अलग-अलग तितलियों को हमेशा अलग-अलग रंग, आकार, सुगन्ध के फूल आकर्षित करते हैं ठीक उसी प्रकार बच्चों का मन भी होता है। सभी विद्यार्थियों की सोचने-समझने की क्षमताएँ, अपेक्षाएँ और आवश्यकताएँ भी अलग-अलग होती हैं जिनकी पूर्ति हमेशा एक ही प्रकार की शिक्षण सहायक सामग्री के द्वारा नहीं की जा सकती है। ऐसी स्थिति में हमें हमेशा कोशिश करनी चाहिए कि हमारे शिक्षण सम्बन्धित प्रयास बच्चों की आवश्यकताओं और अपेक्षाओं के आधार पर परिवर्तनशील हों। इस दिशा में हमारे कार्य, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा- 2005 की एक मुख्य विचारधारा 'बाल केन्द्रित शिक्षा' को भी बल प्रदान करेंगे।

उपरोक्त सभी गतिविधियों को कक्षा-कक्ष प्रक्रिया में विद्यार्थियों के साथ साझा करने में मुझे 6 कालखण्डों का समय लगा। उपरोक्त गतिविधियों को कक्षा-कक्ष में क्रियान्वित करते समय बच्चों द्वारा बहुत से प्रश्न पूछे गए तथा बहुत-सी प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं जिनमें से कुछ का विवरण आगे है।

जब बच्चों को पृथ्वी में स्थित कुल जल के वितरण का प्रदर्शन क्रमशः करके दिखाया तो अन्त में सभी बच्चे अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ देते हुए नज़र आए। जैसे कुछ विद्यार्थी उपयोग लायक जल की इतनी कम मात्रा (%0.0001 अथवा 1 लीटर जल में से लगभग 1 बूँद जल) को देख कर आश्चर्यचकित थे तो वहीं कुछ बच्चे दुखी और चिन्तित थे।अन्त में सभी बच्चों ने वादा किया किवे जल को व्यर्थ नहीं करेंगे तथा दूसरों को भी ऐसा करने से रोकेंगे।

जल-चक्र के मॉडल को लेकर बच्चों ने विशेष रुचि दिखाई तथा बहुत से रोचक प्रश्न किए जिनमें से कुछ निम्न हैं-

प्रश्न 1 : मॉडल में कुछ बादल रोते हुए और कुछ बादल हँसते हुए क्यों दिख रहे हैं? क्या सच में बादलों के रोने से बारिश होती है?

प्रश्न 2 :जल-चक्र में लिखे शब्दों का क्या अर्थ है?

प्रश्न 3 : ग्रीन बोर्ड पर बना जल-चक्र इस मॉडल से अलग है, ऐसा क्यों?

प्रश्न 4 : इसे आपने गोल तख़्ते पर ही क्यों बनाया है? (एक विद्यार्थी ने उत्तर भी दिया कि,'इसी तरह वर्षा भी बार-बार चकरी की तरह होती रहती है शायद इसलिए ऐसा बनाया है।')

इसके अलावा कुछ बच्चों ने मुझसे इस मॉडल को बनाने की प्रक्रिया को उन्हें सिखाने की माँग की, जो कि मेरे लिए भी एक सुखद अनुभव रहा।

उपरोक्त सभी प्रश्न तथा जिज्ञासा शायद इसलिए जाग्रत हुई क्योंकि उन्हें इस तरह पढ़ने और सीखने में मज़ा आ रहा था। इससे उनका अधिगम के प्रति रुझान बढ़ा और वे एकाग्रता के साथ कुछ नया सीख सके।

महाद्वीपों का वितरण और उनकी अवस्थिति को समझाने के लिए प्रदान की गई पहेली को हल करने में सभी बच्चे इतना मग्न हो गए थे कि उन्हें विद्यालय की छुट्टी तक का आभास नहीं हुआ। उन्हें घड़ी दिखाने के बाद भी कुछ विद्यार्थी रुककर पहेली को हल करना चाहते थे, यह एक अनूठी घटना ही थी। क्योंकि कुछ बच्चे अन्तिम कालखण्ड के पूर्ण होने से पहले ही छुट्टी की माँग करने लगते थे, परन्तु उस दिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। उपरोक्त कक्षा-कक्ष गतिविधि से मुझे यही सीख मिली कि बच्चे एक तितली के समान होते हैं जो रंग-बिरंगे फूलों (शिक्षण सहायक सामग्री) के मनोरम दृश्य एवं बगीचे को महकाती उसकी सुगन्ध से आकर्षित हो, उसके रस का पान करने वहाँ एकत्रित हो जाते हैं। एक शिक्षक के रूप में जो सबसे अधिक सुखद अनुभव है, वह यह है कि विभिन्न कक्षाओं के बच्चे उनके किसी भी कालखण्ड के खाली होने पर मुझे अपनी कक्षा में पढ़ाने के लिए बुलाते है। मेरे लिए इस अनुभव को शब्दों में लिख पाना मुश्किल है। पर उनकी यह गतिविधि यह अवश्य दर्शाती है कि उन्हें मेरी शिक्षण-अधिगम की प्रक्रियाएँ अपेक्षाकृत अधिक रिझाती होंगी, जो मेरे लिए किसी बहुत बड़ी उपलब्धि से कम नहीं है और इस अनुभव को प्राप्त करने में शिक्षण सहायक सामग्री का भी एक प्रमुख योगदान रहा है।



आदित्य गुप्ता अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी,छत्तीसगढ़ में शिक्षक हैं। उन्होंने भूगोल विषय से स्नातक किया है और 2019 से सामाजिक विज्ञान शिक्षण कर रहे हैं। एक शिक्षक के रूप में वे सामाजिक विज्ञान विषय को दोस्ताना एवं अंतःक्रियात्मक प्रक्रिया से सीखना-सिखाना पसन्द करते है। इसके अलावा वे कविताएँ, कहानियाँ एवं ब्लॉग लिखने में रुचि रखते हैं। उनसे adityatin.gupta@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।